ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 21 जून 2026 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 21 जून 2026 से 27 जून 2026

ज्येष्ठ शु. 07 • वि० सं०-2082 • वर्ष 67, अंक 25, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 • सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 • पृ.सं. 1-12 • मूल्य - 5/- रु. • वार्षिक शु. 300/- रु.

डी.ए.वी. सैक्टर-8, पंचकूला में भव्य प्रदर्शनी का आयोजन

डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल, सेक्टर–8, पंचकूला के आर्य युवा समाज द्वारा "Empowering Youth through Vedic Wisdom" विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी ने विद्यालय परिसर को वैदिक ज्ञान, सांस्कृतिक चेतना, नवाचार और युवा ऊर्जा के अद्भुत संगम में परिवर्तित कर दिया। विद्यार्थियों ने वेदों की शिक्षाओं को आधुनिक जीवन की चुनौतियों से जोड़ते हुए अनेक शोधपरक मॉडल, चार्ट, पोस्टर, डिजिटल प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधि आधारित परियोजनाएँ प्रस्तुत कीं।

प्रदर्शनी के विभिन्न अनुभागों में वैदिक शिक्षा व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, योग एवं स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता, राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका, स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन–दर्शन तथा वेदों की सार्वकालिक प्रासंगिकता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए संवादात्मक मॉडल रहे, जिनमें वैदिक सिद्धांतों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हुए यह दर्शाया गया कि किस प्रकार युवा वर्ग वैदिक मूल्यों को अपनाकर स्वयं के साथ–साथ समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रितु दिलबागी ने कहा–"वेद मानवता के सबसे प्राचीन और सर्वाधिक प्रासंगिक ज्ञान स्रोत हैं। आज आवश्यकता है कि हम उनके मूल संदेश–सत्य, सेवा, स्वाध्याय, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ।"

डी.ए.वी. आलमपुर ने दोहराया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का महासंकल्प

शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात करने वाली वैश्विक संस्था 'डी.ए.वी.' का स्थापना दिवस डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आलमपुर जिला काँगड़ा हिमाचल प्रदेश में 1 जून 2026 को पूर्ण श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

1 जून 1886 को जिस 'ज्ञान–यज्ञ' का प्रारंभ हुआ था, उसकी प्रतिध्वनि आज विद्यालय के प्रांगण में स्पष्ट सुनाई दी।

विद्यार्थियों ने अपनी तूलिका से आर्य समाज के स्तंभों–लाला लाजपतराय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और त्याग की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज जी–के भव्य चित्र उकेरे। ये चित्र मात्र कलाकृतियाँ नहीं, बल्कि एक भावांजलि थे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री बिक्रम सिंह ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि "डी.ए.वी. केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक विचार है। हमारा संकल्प ऐसे 'श्रेष्ठ मानव' का निर्माण करना है जिनके एक हाथ में आधुनिक विज्ञान की शक्ति हो और दूसरे हाथ में वेदों का ज्ञान।" उन्होंने महात्मा हंसराज जी के 'अवैतनिक सेवा' के संकल्प को याद दिलाते हुए विद्यार्थियों को त्याग और राष्ट्रसेवा का पाठ पढ़ाया।

डी.ए.वी. ताड़ीखेत (उत्तराखण्ड) में हुआ भव्य वैदिक हवन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ताड़ीखेत (उत्तराखण्ड) में भव्य हवन समारोह का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. विनय विद्यालंकार के सानिध्य में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ संपन्न हुआ।

विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य उपस्थित जनों ने श्रद्धापूर्वक आहुति देकर विद्यालय तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, उत्तम स्वास्थ्य, उज्ज्वल भविष्य एवं समाज की सुख–समृद्धि की कामना की।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं 'कच्चाहारी बाबा' के नाम से विख्यात स्वामी गुरुकुलानन्द जी (पूर्व नाम डॉ. ज्ञान प्रकाश) ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए 'ओ३म्' के उच्चारण के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व पर प्रकाश डाला। 'ओ३म्' का उच्चारण मन को शांति, एकाग्रता और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

कार्यक्रम का समापन शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। विद्यालय परिवार ने ऐसे आयोजनों को भारतीय संस्कृति एवं वैदिक परंपराओं के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम में डी.ए.वी. हल्द्वानी के प्रधानाचार्य अमित जोशी, डी.ए.वी. ताड़ीखेत के प्रधानाचार्य प्रवीन सिंह नेगी, कैलाश चंद्र सती, गीता पँवार सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 21 जून 2026 से 27 जून 2026

निर्भय बनूँ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ६.६४.२१

ऋषि: **मैत्रावरुणि: वसिष्ठ:**। देवता **पवमान: सोम:**। छन्द: **गायत्री।**

● (**यत्**) जो, (**अन्ति**) समीप, (**यत् च**) और जो, (**दूरके**) दूर, (**इह**) यहाँ, (**मां**) मुझे, (**भय**) भय, (**विन्दति**) प्राप्त करता है, (**पवमान**) हे सर्वत्र–संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, (**तत्**) उसे, (**वि जहि**) विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म–विश्वास और प्रभु–विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी–संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना–ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपस्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय–कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या–वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म–संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र–संचारी, सर्वव्यापी और अन्त:करण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय–दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु–भक्ति

● **महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती**

स्वामी जी 'प्रभु–भक्ति' पुस्तक में भक्तों के लिए उपयोगी बातें प्रस्तुत कर रहे हैं।

धर्म विमुख मनुष्य का मन मुर्दा है, लोभी, आलसी मत बनो गुरु के ज्ञान से मानव जीवन को सफल बनाकर निरन्तर मोक्ष की तरफ बढ़ों, बुरे कर्मों से बचो, विषयों में मत फँसो, भगवान की भक्ति से वासनाओं, पाप वृत्तियों को भस्म कर दो, सन्त समागम करो, ब्रहमचर्य का पालन करो, परमेश्वर की भक्ति से जीवात्मा उन्नत होगा। भगवान की भक्ति सम्पत्ति और उससे विमुख होना ही विपत्ति है। निरोगी व्यक्ति ही सब कुछ करने में समर्थ है। ईश्वर ने हमें जो कुछ भी दिया है उसे केवल अपने लिए उपयोग मत करो वरन् संसार के उपकार के लिए भी खर्च करो। जो लोगों के अत्याचारों से व्यथित नहीं होते, वही महापुरुष हैं।

समाप्त

भक्तों के लिए उपयोगी बातें

76. पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप! आज तक जो कुछ भी हो चुका, उस पर पश्चात्ताप करो। आँसू बहाकर मन का मैल दूर करो और भगवान् से कहो–"महाराज! आज से अपने चरणों में स्थान दो। और कुछ दो या न दो, परन्तु अपनी भक्ति का भाव अवश्य दो।" पश्चात्ताप का रुदन मनुष्य के हृदय में अलौकिक शान्ति ले आता है।

77. जब लोग मुझे पागल कहेंगे और मुझे अपने काम का न समझेंगे, जब सांसारिक लोग मुझे परे हटा देंगे, तभी मेरे मन में वास्तविक तत्त्व का प्रकाश होगा।

78. सुख–दु:खों की स्थिति कर्मानुसार होने से उनका अनुभव सबके लिए अनिवार्य है, इसलिए सुख का अनुभव करते समय भी भगवान् को याद रक्खो और दु:खकाल में भी उसकी निन्दा न करो, अपितु भगवान् का धन्यवाद करो कि उन्होंने आपके मन की मैल को दूर करने का उपाय किया है। दु:ख को तपस्या और प्रायश्चित्त का रूप समझो।

79. समय क्यों खो रहे हो ? व्यर्थ की बातचीत से क्या लाभ ? भगवान् में ही अपने चित्त को लगाओ। **(माध्वाचार्य)**

80. भगवान् ने तुम्हें जिह्वा क्यों दी? एक भक्त इसका यह उत्तर देता है–

जिह्वा तो तब ही भली,
जपे हरी का नाम।
नहीं तो काट निकालिए,
मुख में भलो न चाम।।

81. यज्ञ से शेष बचे अन्न को खानेवाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने शरीर–पोषण के लिए ही पकाते हैं, वे पाप को ही खाते हैं। **(गीता)**

82. जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममता–रहित, अहंकार–रहित और स्पृहा–रहित हुआ व्यवहार करता है, वह शान्ति को प्राप्त होता है।

83. नाश हो गए हैं सब पाप जिनके और ज्ञान–प्राप्ति से निवृत्त हो गया है संशय जिनका, और सम्पूर्ण प्राणियों के हित में है रति जिनकी, एकाग्र हुआ है भगवान् के ध्यान में चित्त जिनका, ऐसे ब्रह्मवेत्ता पुरुष शान्त परब्रह्म को प्राप्त होते हैं। **(गीता)**

84. न धन चाहिए न मकान, न वाटिका चाहिए न दुकान, भाई ! भगवान् की भक्ति के लिए केवल हृदय चाहिए, और हृदय भी वह जो प्रेम, पतिव्रत तथा पुरुषार्थ से सना हुआ हो।

85. जीवात्मा इन्द्रियों के वश होकर निश्चित बड़े–बड़े दोषों को प्राप्त होता है, और जब इन्द्रियों को अपने वश में करता है, तभी सिद्धि को प्राप्त होता है। **(मनु)**

86. जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट हो कर शुद्धि होती है, वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

('विश्व पर्यावरण दिवस' पर विशेष)

वेदों में पर्यावरण विज्ञान

● स्वर्गीय डॉ. रामनाथ वेदालंकार

वेद का सन्देश है कि मानव शुद्ध वायु में श्वास ले, शुद्ध जल का पान करे, शुद्ध अन्न का भोजन करे, शुद्ध मिट्टी में खेले–कूदे, शुद्ध भूमि में खेती करे। ऐसा होने पर ही उसे वेद–प्रतिपादित सौ वर्ष या सौ से भी अधिक वर्ष की आयु प्राप्त हो सकती है। परन्तु आज न केवल हमारे देश में, अपितु विदेशों में भी प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि मनुष्य को न शुद्ध वायु सुलभ है, न शुद्ध जल सुलभ है, न शुद्ध अन्न सुलभ है, न शुद्ध मिट्टी और शुद्ध भूमि सुलभ है। कल–कारखानों से निकले अपद्रव्य, धुआँ, गैस, कूड़ा–कचरा, वन–विनाश आदि इस प्रदूषण के कारण हैं। प्रदूषण इस स्थिति तक पहुँच गया है कि कई स्थानों पर तेजाबी वर्षा तक हो रही है। 18 जुलाई, 1983 के दिन भारत के बम्बई शहर में तेजाबयुक्त वर्षा हो चुकी है। यदि प्रदूषण निरन्तर बढ़ता गया तो वह दिन दूर नहीं जब यह भूमि मानव तथा अन्य प्राणियों के निवासयोग्य नहीं रह जायेगी।

पर्यावरण–प्रदूषण की चिन्ताजनक स्थिति को देखकर 5 जून, 1972 को बारह संयुक्त राष्ट्रों की एक बैठक, इस विषय पर विचार करने के लिए, स्टाकहोम (स्वीडन) में आयोजित हुई थी, जिसके फलस्वरूप विभिन्न राष्ट्रों द्वारा पर्यावरण–सुरक्षा हेतु प्रभावशाली कदम उठाए गए। उक्त गोष्ठी में भारत की तीसरी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी **'पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव'** विषय पर भाषण दिया था। उसके पश्चात् भारत में पर्यावरण–प्रदूषण का अध्ययन करने, उसे रोकने के उपाय सुझाने एवं उनके क्रियान्वयन करने हेतु अनेक सरकारी तथा व्यक्तिगत या जनता की ओर से सामूहिक प्रयास होते रहे हैं तथा आज भी अनेक संस्थाएँ इस दिशा में कार्यरत हैं। प्रस्तुत लेख में हम यह दर्शायेंगे कि वेद का पर्यावरण के सम्बन्ध में क्या विचार है!

1. वायु– स्वच्छ वायुमण्डल का महत्त्व

स्वच्छ वायु का सेवन ही प्राणियों के लिए हितकर है यह बात वेद के निम्न मन्त्रों से प्रकट होती है–

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूंषि तारिषत्।। ऋ. 10.186.1

वायु हमें ऐसा ओषध प्रदान करे, जो हमारे हृदय के लिए शांतिकर एवं आरोग्यकर हो, वायु हमारे आयु के दिनों को बढ़ाए।

यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे।। ऋ. 10.186.3

हे वायु! जो तेरे घर में अमृत की निधि रखी हुई है, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर, जिससे हम दीर्घजीवी हों।

यह वायु के अन्दर विद्यमान अमृत की निधि ओषजन या प्राणवायु है, जो हमें प्राण देती है तथा शारीरिक मलों को विनष्ट करती है। उक्त मन्त्रों से यह भी सूचित होता है कि प्रदूषित वायु में श्वास लेने से मनुष्य अल्पजीवी तथा स्वच्छ वायु में (कार्बन–द्विओषिद की मात्रा कम तथा ओषजन की मात्रा अधिक होती है) श्वास लेने से हमें लाभ कैसे पहुँचता है, इसका वर्णन वेद के निम्नलिखित मन्त्रों में किया गया है–

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।।

ऋ. 10.137.2,3 अथर्व. 4.13.2,3

ये श्वास–निःश्वास रूप दो वायुएँ चलती हैं, एक बाहर से फेफड़ों के रक्त–समुद्र तक और दूसरी फेफड़ों से बाहर के वायुमंडल तक। इनमें से पहली, हे मनुष्य ! तुझे बल प्राप्त कराए और दूसरी रक्त में जो दोष है उसे अपने साथ बाहर ले जाये। हे शुद्ध वायु ! तू अपने साथ ओषध को ला। हे वायु ! शरीर में जो मल है उसे तू बाहर निकाल। तू सब रोगों की दवा है, तू देवों का दूत होकर विचरता है।

वनस्पतियों द्वारा वायु–शोधन–

कार्बन–द्विओषिद (Carbon Dioxide) की मात्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ने पर वायु प्रदूषित हो जाता है। वैज्ञानिक लोग बताते हैं कि प्राणी ओषजन ग्रहण करते हैं तथा कार्बन–द्विओषिद छोड़ते हैं, किन्तु वनस्पतियाँ कार्बन–द्विओषिद ग्रहण करती हैं तथा ओषजन छोड़ती हैं। वनस्पतियों द्वारा ओषजन छोड़ने की यह प्रक्रिया प्रायः दिन में ही होती है, रात्रि में वे भी ओषजन ग्रहण करती तथा कार्बन–द्विओषिद छोड़ती हैं। पर कुछ वनस्पतियाँ ऐसी भी हैं जो रात्रि में भी ओषजन ही छोड़ती हैं। कार्बन–द्विओषिद को चूसने के कारण वनस्पतियाँ वायु–शोधन का कार्य करती हैं। वायु–प्रदूषण से बचाव के लिए सबसे कारगर उपाय वनस्पति–आरोपण है। वेद भगवन् का सन्देश है **"वनस्पति वन आस्थापयध्वम् अर्थात् वन में वनस्पतियाँ उगाओ** ऋ. 10.101.11"। यदि वनस्पति को काटना भी पड़े तो ऐसे काटें कि उसमें सैकड़ों स्थानों पर फिर अंकुर फूट आएँ। वेद का कथन है–

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः
प्रणिनाय महते सौभगाय।
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो
विरोह, सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम।।

यजु. 5.43

हे वनस्पति, इस तेज कुल्हाड़े ने महान सौभाग्य के लिए तुझे काटा है, तू शतांकुर होती हुई बढ़, तेरा उपयोग करके हम सहस्रांकुर होते हुए वृद्धि को प्राप्त करें।

अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्। यजु. 12.100

हे ओषधि, तू दीर्घायु होती हुई शत अंकुरों से बढ़।

वेद सूचित करता है कि सूर्य और भूमि से वनस्पतियों में मधु उत्पन्न होता है, जिससे वे हमारे लिए लाभदायक होती हैं–

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्य्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। –यजु. 13.29

वनस्पति हमारे लिए मधुमान हो, सूर्य हमारे लिए मधुमान् हो, भूमियाँ हमारे लिए मधुमती हों।

फूलों–फलों से लदी हुई ओषधियाँ नित्य भूमि पर लहलहाती रहें, ऐसा वर्णन भी वेद में मिलता है–**"ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः** ऋ. 10.97.3"। वेद यह भी कहता है **"मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव। मधुमत्पर्णं मधुमत्पुष्पमासां** अथर्व. 8.7.12"। अर्थात् ओषधियों का मूल, मध्य, अग्र, पत्ते, फूल सभी कुछ मधुमय हों।

वेद मनुष्य को प्रेरित करता है **"मापो मौषधीर्हिंसीः** – यजु. 6.22"। अर्थात् तू जलों की हिंसा मत कर, ओषधियों की हिंसा मत कर। जलों की हिंसा से अभिप्राय है उन्हें प्रदूषित करना तथा ओषधियों की हिंसा का तात्पर्य है उन्हें विनष्ट करना।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में ओषधियों के पाँच वर्ग बताए गए हैं तथा यह भी कहा गया है कि ये हमें प्रदूषण **(अहंस्)** से छुड़ाए–

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः।
दर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

–अथर्व. 11.6.15

'सोम, दर्भ, भंग, यव, सहस' आदि ओषधियों का ज्ञानपूर्वक प्रयोग करते हुए हम रोगों का समूल विनाश करते हैं।

वेद में घरों के समीप कमल–पुष्पों से अलंकृत छोटे–छोटे सरोवर बनाने का विधान मिलता है– **उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः** –अथर्व 4.34.5,–7। फव्वारों का विधान इस हेतु किया गया प्रतीत होता है कि ऊपर उठती तथा चतुर्दिक् फैलती जल–धाराओं पर जब सूर्य–किरणें पड़ती हैं, तब उनमें प्रदूषण को हरने की विशेष शक्ति आ जाती है।

अथर्ववेद के भूमिसूक्त में भूमि को कहा गया है, **"अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु** –अथर्व. 12.1.11,17"। अर्थात् तेरे जंगल हमारे लिए सुखदाई हों।

2. शुद्ध जलों का महत्त्व

वेद का कथन है **"अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम्** –ऋ. 1.23.19" अर्थात् शुद्ध जलों के अन्दर अमृत होता है, ओषध का निवास रहता है। **"आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि** –ऋ. 1.23.23" अर्थात् शुद्ध जल के सेवन से मनुष्य रसवान् हो जाता है। **"ऊर्न्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्** –यजु. 2.34" अर्थात् शुद्ध जलों में ऊर्जा, अमृत, तेज एवं पोषक रस का निवास होता है। "शुद्ध जल पान किये जाने पर पेट के अंदर पहुँचकर पाचन–क्रिया को तीव्र करते हैं। वे दिव्यगुणयुक्त, अमृतमय, स्वादिष्ट जल रोग न लानेवाले, रोगों को दूर करनेवाले, शरीर के प्रदूषण को दूर करनेवाले तथा जीवन–यज्ञ को बढ़ानेवाले होते हैं" –यजु. 4.12।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।। –ऋ. 10.9.1

शुद्ध जल आरोग्यदायक होते हैं, शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, वृद्धि प्रदान करते हैं, कण्ठस्वर को ठीक करते हैं तथा दृष्टि–शक्ति बढ़ाते हैं।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।। –ऋ. 10.9.4

शुद्ध जलों का पान करके एवं उन्हें अपने चारों ओर बहाकर अर्थात् उनमें डुबकी लगाकर या कटि–स्नान करके हम अपना स्वास्थ्यरूप अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं।

क्रमशः

'आर्ष ज्योतिः' से साभार
प्रस्तुति डॉ. विवेक आर्य

गतांक से आगे...

ईश्वर - अस्तित्व का प्रमाण - सृष्टि रचना

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

देव महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें सम्मुलास में, इस्लाम मत की समीक्षा 161 प्रश्नोत्तर के रूप में लिखी है इनमें से 18 प्रश्नोत्तर सृष्टि रचना के सम्बन्ध में हैं– 7, 28, 42, 43, 72, 90, 99, 112, 118, 122, 125, 138 147 149 151, 154, 155 और 156 प्रश्न कुरान से हैं और आयतों का संदर्भ भी दिया है। समीक्षा–उत्तर महर्षि दयानन्द ने दिया है। अत्यधिक विस्तार न हो उसको दृष्टिगत रखते हुए केवल सारांश दिया जा रहा है। सत्यार्थ प्रकाश सर्वत्र सब भाषाओं में उपलब्ध है।

कुरआन में सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में दो कथन हैं–खुदा ने कहा–हो जा और सृष्टि की रचना हो गई–(27)। खुदा ने आसमानों और पृथिवी को छः दिन में बनाया और सातवें दिन आसमान (अर्श) पर आराम किया (72), (77), (90)। *अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है* (43) *पृथिवी बिछौना और आसमान छत* (7), *आसमानों को बिना खम्भे खड़ा किया और आसमान पर ठहरा* (96), *सूर्य–चन्द्र फिरते है, पृथिवी नहीं* (99), *पृथिवी के बीच पहाड़ खड़े किए जिससे वह हिल न जावे* (112), *बादलों के फटने से आसमान फट जायेगा* (118), *पहाड़ बादलों के समान चलते हैं* (122), *दो बार ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है* (125), *सात आसमान दो दिन में बनाए। मुर्दों को वह जीवित कर देता है* (138), *आसमान फट जाएगा* (147), *एक के ऊपर एक रख कर सात तल के बीच में सूर्य और चन्द्रमा को रखा* (149), *सूर्य लपेटा जावे, तारे गंदले हो जायें, पहाड़ चलाए जावें और आसमान की खाल उतारी जाए* (154), (164)। *आसमान फट जाए* (165), *तारे झड़ जावें। दरिया चीरे जावें। कबरें जिला कर उठाई जावें।* (155), *आसमान बुर्जवाला है* (156)। *इकट्ठा किया जाएगा सूर्य और चाँद* 161 *हैं।*

कुरआन की समीक्षा का उपसंहार करते हुए महर्षि लिखते हैं– मुझसे पूछो तो यह किताब न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई हुई है। और न ही, यह विद्या की पुस्तक हो सकती है। यह तो थोड़ा–सा दोष प्रकट किया इसलिए कि लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गवाएँ।

जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है, वह वेदादि पुस्तकों के भी अनुकूल होने से, जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य मजहब हर और पक्षपात रहित बुद्धिमानों को ग्राह्य है। इसके बिना (अतिरिक्त) जो कुछ इसमें है, वह सब अविद्या भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शांति भंग कराकर, उपद्रव मचा, मनुष्यों में विद्रोह फैला, परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है।

महर्षि दयानन्द के उक्त उद्गारों के पीछे कुरआन की कौन–सी आयते हैं, जो उनके निष्कर्ष को 150 वर्ष के बाद भी ठोस आधार प्रदान करती हैं, उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। विस्तार अत्यधिक हो जावेगा इसलिये कुछेक आयतों को जो प्रश्न के रूप में है, दे दूँगा। शेष के लिये सत्यार्थ प्रकाश का अवलोकन करने का कष्ट करें।

21, 31, 37, 54, 55, 58, 62, 64, 67, 72, 85, 87, 88, 89, 94, 95, 110, 113, 116, 118, 148, 151, 152, 153, 156, (कुल 25)।

1 कुरआन 21–*आनन्द का सन्देशा ईमानदारों को। जो अल्लाह, फरिश्तों, पैगम्बरों, जिबराईल और मिथाइल का शत्रु है। अल्लाह भी ऐसे काफिरों का शत्रु है।*

1 कुरआन 31–*मंजिल[1] सियारा[1] सूरत[2] आयत 97, 98 जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं उनके लिये यह मत कहो कि ये मृतक हैं किन्तु वे जीवित हैं।* मंजिल[1] सियारा[2] सूरत[2] आयत 154।

3 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश, *प्रश्न 37*– *अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं। मार डालो तुम उनको, जहाँ पाओ। कतल से कुफ़्र बुरा है। यहाँ तक उनसे लड़ो कि कुफ़्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का। उन्होंने जितनी ज्यादती करी, उतनी ही उनके साथ करो। मंजिल[1] सियारा[2] सूरत[2] आयत 190,191, 193, 194।*

नोट–जो मुसलमान के मत को ग्रहण न करे उसे कुफ़्र कहते हैं। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 662।

4 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश, *प्रश्न 64* *और अपने हाथों को न रोकें, उनको पकड़ लो और जहाँ पाओ मार डालो......... और जो कोई मुसलमान को जान कर मार डाले, वह सदैव काल दोजख में रहेगा। उस पर अल्लाह का क्रोध और लानत है।* मंजिल[1] सियारा[5] सूरत[4] आयत 91,92,93।

5 कुरान/ सत्यार्थ प्रकाश, प्रश्न 67–निश्चय अल्लाह बुरे लोगों को, और काफिरों को जमा करेगा दोजख में। निश्चय बुरे लोग धोखा देते हैं अल्लाह को, और उनको वह धोखा देता है। ऐ ईमान वालो ! मुसलमानों को छोड़, काफिरों को मित्र मत बनाओ। मंजिल[1] सियारा[5] सूरत[4] आयत 140, 142, 144।

6 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश प्रश्न 72 *काफिरों पर ग़म मत खा।* मंजिल[2] सियारा[6] सूरत[5] आयत 95।

7 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 85 *और काटें जड़ काफिरों की। मैं तुमको सहाय दूँगा साथ सहस्त्र फरिश्तों के पीछे–पीछे आने वाले। अवश्य मैं काफिरों के दिलों मे भय डालूँगा, बस मारो गर्दनो के, मारो उनमें से हर पोरों पर।* मं 2 सि. 9 सू. 8 आयत 7.9.12।

8 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 87 *और लड़ो उनसे यहाँ तक कि न रहे फितना यानि बल का और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के और जानो तुम यह कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के हैं पांचवाँ हिस्सा उसका, वास्ते रसूल के, निश्चय मैं तुम्हारा पक्षी (पक्षपर) हूँ।* मंजिल[2] सियारा[9] सूरत[8] आयत 39, 41, 48

9 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश प्रश्न 88 *और कभी जब देखें काफिरों को, फरिश्ते कब्जा करते हैं, मारते हैं मुख उनके, पीठ उनकी। और कहते अजाब जलने का। हमने उनके पाप से उनको मारा और हमने फिराओन की कौम (फैरो इजिप्ट–मिश्र देश का राजा) को डुबो दिया। और तैयारी करो वास्ते उनके जो कुछ तुम कर सको।* मंजिल[2] सियारा[10] सूरत[8] आयत 50, 54, 60।

10 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 113 *और यह बस्तियाँ हैं कि मारा हमने उनको जब अन्याय किया उन्होंने और हमने उनके मारने की प्रतिज्ञा स्थापन की।* मंजिल[4] सियारा[15] सूरत[18] आयत 59।

11 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 118 *और जिसको चाहा मारा हमने, हद्द से निकलने वालों को।*

12 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 156 *ऐ नबी! झगड़ा कर काफिरों से, और गुप्त शत्रुओं से, और सख्ती कर ऊपर उनके।* मं. 7 सियारा 28 सूरत 66 आयत 9।

13 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 58 *ऐ ईमान वालो ! परस्पर थामें रक्खो और लड़ाई में लगे रहो। अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ।* मंजिल[1] सियारा[4] सूरत[3] आयत 200।

14 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 56 *यह लड़ाई इसलिये कि अल्लाह तुम्हारी परीक्षा लेवे।* मंजिल[1] सिपारा[4] सूरत[3] आयत 11।

15 कुरान/सत्यार्थ प्रकाश 62 *बस उनको चाहिए खुदा के मार्ग में लड़ें। जो लोग ईमान लाए, खुदा के मार्ग में लड़ते हैं, जो काफिर हैं, बुतों के मार्ग में लड़ते हैं। .... कह सब अल्लाह की ओर से है।* मंजिल[1] सियारा[5] सूरत[4] आयत 75, 76

ऊपर वर्णित कुरान की आयतों के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द का निष्कर्ष, संदेह से परे है कि **"कुरान (1) मनुष्य की आत्मा को पशुवत बनाता है (2) शान्ति भंग करता है (3) उपद्रव मचा कर विद्रोह फैलाता है और मानव–मानव के बीच दुःख की वृद्धि करने वाला है।"** महर्षि का निष्कर्ष काल्पनिक नहीं बल्कि अनुभूत सत्य थे। आज भी झुठलाये नहीं जा सकते। सत्यार्थ–प्रकाश (परोपकारिणी सभा, अजमेर, 39 वीं आवृति) के पृष्ठ 683 पर महर्षि या कथन हैं–"आश्चर्य है कि जो बुद्धिमान मुसलमान हैं वे भी इस निर्मूल अयुक्त मन को मानते हैं।"

पैगम्बर मुहम्मद अपने को चौथा नबी/रसूल मानते हैं और आदेश दे गए हैं कि वह ही अंतिम नबी हैं और उनके बाद कोई नबी नहीं होगा। वह अपने से पहिले तीनों नबी और उनके उपदेशों को मानते हैं– इब्राहीम (अब्राहम), ग्रंथ सहूफ–ए–इ–इब्राहीमी (2) मूसा (मौसेस), ग्रंथ तौरेत (3) ईसा मसीह (जीसस क्राइस्ट) ग्रंथ – बाईबिल। इन तीनों ग्रंथो का प्रचुरता से कुरान में समावेश है। प्रकारांतर से भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिये इन दोनों मतों को जोड़ कर चर्चा की जा सकती है।

विश्व की जनसंख्या 720 करोड़ है इसमें ईसाई 240 करोड़ और 170 करोड़ मुस्लिम आबादी है जिनका योग 410 करोड़ है, जो विश्व की आधी आबादी से अधिक है। भारत की वर्तमान जनसंख्या 132 करोड़ (2017 में) है जिसमें मुस्लिम आबादी 20 करोड़ के लगभग है। महर्षि दयानन्द के समय भारत की आबादी में 20 करोड़ थी और पाकिस्तान को वर्तमान आबादी भी 20 करोड़ है।

यद्यपि इस लेख पर कार्य करते हुए लगभग एक माह हो रहा है लेकिन समापन से पूर्व माननीय मोदी जी का 15 अगस्त 17 को देश के 70वें स्वाधीनता दिवस पर दिए गए भाषण की प्रासंगिक वाक्यावली का उपयोग समयानुकल व समीचीन लगता है! **"मामला 20 करोड़ मुस्लिम जनसंख्या का है जिसे न**

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गतांक से आगे...

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

श्री चिन्नस्वामी (म.म. वैंकट सुब्रह्मण्य शास्त्री) का अत्युत्कृष्ट अध्यापन

मीमांसा शास्त्र का वैदिक–कर्म काण्ड के साथ सम्बन्ध है। समस्त वैदिक वाङ्मय, अर्थात् वेद, उसकी शाखाएँ, ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र गृह्यसूत्र, आदि वैदिक कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करते हैं। इन्ही विविध ग्रन्थों के विवादास्पद वचनों की सङ्गति लगाने के लिए मीमांसा शास्त्र का प्रवचन हुआ है। इसलिए यह आवश्यक माना जाता है कि मीमांसा के अध्ययन से पूर्व एक वेद, एक ब्राह्मण और एक श्रौतसूत्र का अध्ययन आवश्यक है। साथ ही यज्ञीय क्रियाओं का बोध भी अत्यावश्यक है। जिनको उक्त ग्रन्थों का तथा याज्ञिक क्रियाओं का परिज्ञान नहीं होता है, उनके लिए मीमांसा का अध्ययन अत्यन्त दुष्कर है। वर्तमान में इस परम्परा का उच्छेद हो जाने से मीमांसा–शास्त्र बहुत दुरूह बन गया।

पूज्य चिन्नस्वामीजी मीमांसा–शास्त्र के जहाँ शास्त्रीय दृष्टि से परम विद्वान् थे, वहाँ कर्मकाण्ड के भी विशिष्ट ज्ञाता थे। अतः मीमांसा–शास्त्र में जिस किसी भी वचन की विवेचना का प्रसंग आता था, तो वे उक्त वचन किस शाखा वा किस ब्राह्मण वा किस श्रौत का है, तथा किस प्रकरण का है, यह सब बता कर तद्विषयक भाष्य का अध्यापन कराते थे। यद्यपि मैंने नियमतः वेदादि आवश्यक ग्रन्थों का अध्ययन तो नहीं किया था, तथापि स्वाध्याय की प्रवृत्ति के कारण उपलब्ध सभी शाखाओं और ब्राह्मणों का मैं पारायण कर चुका था। इस कारण पूज्य गुरुवर्य पढ़ाते समय जब किसी वैदिक–वचन के सम्बन्ध में उसका स्थान निर्देश करते थे वा पूर्वापर प्रसंग बताते थे, तो पारायणजन्य संस्कार उदबुद्ध हो जाते थे। उससे मुझे प्रसंग को समझने में बहुत सहायता मिलती थी। अध्ययन के पश्चात् लगभग 42 वर्ष मीमांसा शास्त्र से असम्पृक्त रहने पर भी जब मैंने शाबर भाष्य की हिन्दी व्याख्या लिखनी आरम्भ की तो अध्ययन–काल का पदार्थ स्मृतिपटल पर उपस्थित हो जाता था। इसमें प्रमुख कारण पूज्य गुरुवर्य का विशिष्ट अध्यापन ही है, क्योंकि पूज्य गुरुजी ने प्रत्येक पदार्थ को हृदय में इस प्रकार प्रतिष्ठित करा दिया था कि इतने सुदीर्घकाल के अन्तराल होने पर भी यथावत् उदबुद्ध हो जाता था। **इसमें वेदादि शास्त्रों के मेरे द्वारा अनायास किये गये पूर्व पारायण ने भी विशिष्ट भूमिका निभाई।** ढाई वर्ष के सुदीर्घकाल में पूज्य गुरुजी से शाबरभाष्य के लगभग 3 (तीन) अध्याय और श्लोकवार्तिक के कुछ प्रकरण पढ़ पाये। पूज्य गुरुवर्य के दामाद पं. पट्टाभिराम शास्त्री पास में ही रहते थे। वे मीमांसाशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। अतः शेष शाबरभाष्य का अध्ययन उनसे पूरा किया। शाबरभाष्य के कुछ अध्यायों के पाठ के अनन्तर शास्त्रदीपिका का पाठ चला, उसे भी हम सुनते रहे। **{आत्म–परिचय, – युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–172, 173, 175}**

कात्यायन श्रौतसूत्र का अध्ययन

कर्मकाण्ड की याज्ञिक प्रक्रिया के परिज्ञान के लिए मीमांसकजी ने म.म. विद्याधर शास्त्री से कात्यायन श्रौतसूत्र पढ़ना प्रारम्भ किया। कुछ समय के पश्चात् गुरुजी इन्हें आर्यसमाजी जानकर पढ़ाने में अन्यमनस्क हो गये। अतः राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में कर्मकाण्ड के अध्यापक पं. भगवत्प्रसाद मिश्र से **कात्यायन श्रौतसूत्र** का अध्ययन किया। मिश्रजी काशी के उदार पण्डितों में अग्रणी थे, जिनकी मान्यता थी–**मेरे पास कोई भी मनुष्याकृति आकर पढ़ सकता है। {आत्म–परिचय, – युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–176}**

पं. युधिष्ठिर मीमांसकजी की आत्मकथा आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व (1926 से 1934 ई.) की काशी में संस्कृत के शास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन–अध्यापन का मुँह बोलता चित्र उपस्थित करती है। आर्यसमाज के आन्दोलन और उसके प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द जी का काशी–शास्त्रार्थ तथा स्वामीजी के काशी में 7 सात बार के आगमन से काशी में हलचल मच गई थी। वाराणसेय पण्डित दो भागों में बँट गये थे–1. उदारवादी, 2. अनुदारवादी। **उदारवादी** पण्डितों में वैयाकरण मूर्धन्य पं. देवनारायण तिवारी, म.म. पं. चिन्नस्वामी शास्त्री, पं. दुण्ढिराजशास्त्री, पं. गिरीश शर्मा, पं. भगवत्प्रसाद मिश्र आदि थे और उनके सहयोगी थे–पं. केदारनाथजी सारस्वत, पं. महादेवजी नैयायिक, पं. देवीप्रसाद कवि चक्रवर्ती और पं. गोपालशास्त्री दर्शनकेशरी। उदारवादी पण्डितों के पक्षधर थे महामना पं. मदनमोहन मालवीय **अनुदारवादी** पण्डितों में पण्डित लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़ और उनके पुत्र पं. राजेश्वर शास्त्री द्रविड़, पं. चण्डीप्रसाद शुक्ल, पं. विद्याधर शास्त्री, सस्वर सामगान पढ़ाने–सिखाने वाले वेदपाठी पण्डित आदि। इन सभी के पक्षपोषक थे काशी के महाराजा। काशीनरेश का सम्बल और समर्थन रुढ़िवादी पौराणिक पण्डितों को पूर्व से ही चला आ रहा था। आर्यसमाजी छात्रों का खद्दर पहनना तथा अभिवादनार्थ नमस्ते बोलना भी उन्हें न पढ़ाने का निमित्त बन जाता था। अनुदारवादी पण्डित विधवा विवाह, अछूतोद्धार तथा मुसलमानों की शुद्धि के विरोधी थे। दुःख का विषय यह है कि आज भी काशी के कतिपय पण्डित और मुखर शंकराचार्य (स्वामी निश्चलानन्द तथा स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द) अनुदारवादी – रुढ़िवादी पण्डितों के पक्षपोषक बने हुए हैं।

मीमांसक जी के अगाध शास्त्रीय पाण्डित्य का कारण उनका निरन्तर स्वाध्याय में संलग्न रहना था। मीमांसक जी स्वयं लिखते हैं–"मैने अपने जीवन में शास्त्र– ज्ञान–सम्बन्धी जो कुछ उपलब्धि प्राप्त की है, उसमें स्व–स्व विषयों के पारंगत परम सहृदय शिष्यहितेच्छु गुरुजनों का अध्यापन तो केन्द्रीभूत है ही, परन्तु इसके अतिरिक्त अध्ययनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में ही आरम्भ हुए पाठयविषयग्रन्थों से भिन्न विविध विषयों के ग्रन्थों के पारायणरूप स्वाध्याय को मैं प्रमुख मानता हूँ।... सन् 1926 के उत्तरार्ध में प्रारम्भ हुआ पारायणरूप स्वाध्याय निरन्तर आगे बढ़ता गया और इसने जरामर्य–सत्र का रूप ले लिया। जिसमें प्रातःकाल 4.30 (साढ़े चार) बजे उठने से लेकर रात में 10.00 दस बजे सोने तक पाठ्यग्रन्थों के अध्ययन–मनन–स्मरण एवं पुनरावर्तन कार्य में लगे 10 घंटों के अतिरिक्त रात 9–10 तक 1 घंटा सामान्य ग्रन्थों के अध्ययन और पारायण के लिए नियत था। इस स्वाध्यायरूपी ब्रह्मसत्र को आरम्भ हुए 65 वर्ष हो चुके हैं। इस सुदीर्घ अवधि में मैंने विविध विषयों के सहस्रों मुद्रित और हस्तलिखित ग्रन्थों (इनमें से अनेक ग्रन्थ मेरे पारायणकाल के 40–50 वर्ष पश्चात् छपे और अनेक अभी तक छपे ही नहीं) का पारायण किया है। हस्तलिखित ग्रन्थों की उपलब्धि के लिए देश विभाजन से पूर्व लाहौर के डी०ए०वी० कॉलेज का तथा पंजाब विश्वविद्यालय का विशाल पुस्तकालय प्रधान सहायक थे। सन् 1932–34 के मध्य अध्ययनार्थ काशी रहने पर "संस्कृत महाविद्यालय" (सम्प्रति 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय') के विशाल हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह से प्रभूत सहायता प्राप्त हुई। देश विभाजन के पश्चात् प्राच्यविद्या के प्रमुख केन्द्र 'पुणे', जहाँ अनेक बड़े–बड़े पुस्तकालय हैं, की कई बार यात्रा की। इनके अतिरिक्त पटना, कलकत्ता, गोण्डल (सौराष्ट्र), मैसूर, बड़ौदा और मद्रास प्रभृति नगरों में विद्यमान पुस्तकालयों का उपयोग करने के लिए यात्राएँ करके विविध विषयों के शोधनिष्णात विद्द्वरों से भेंट की, जिससे समय–समय पर मुझे सहयोग मिलता रहा। **{वैदिक सिद्धान्त मीमांसा (भाग – 2), – युधिष्ठिर मीमांसक, भूमिका, पृष्ठ–3–41 प्रथम संस्करण, 1992 ई.}**

श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोजी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित् लम्बे लेख से लाभान्वित हो। इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं।

यह लेख की दूसरी किश्त है।

–सम्पादक

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड,
अमेठी (उत्तर–प्रदेश)–227405

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

● भद्रसेन

> **'चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु' शीर्षक से छपे विद्वान् लेखक के युवाओं की स्थिति पर विचार पढ़ने के बाद अब इसी ट्रैक्ट के 'धर्म' और 'शास्त्र' पर चर्चा पढ़ें -सम्पादक**

गतांक से आगे...

धर्म

धर्म शब्द **धृ** धातु से बनता है, जिस का अर्थ है–धारण, पालन, अपनाना। अतः **'ध्रियते, धार्यते, सेव्यते सुख–प्राप्तये यः स धर्मः'** जिसका सीधा सा भाव है कि वे बातें, मान्यतायें, कार्य, व्यवहार धर्म हैं, जिनके धारण, पालन, अपनाने से जीवन का वह–वह कार्य, रूप टिका रहे, सुदृढ़ हो जैसे कि आपस में अच्छे ढंग से बोलने पर वक्ता–श्रोता का व्यवहार टिका रहता है। वे एक–दूसरे से जुड़ कर सुख, स्नेह अनुभव करते हैं, पर *औखे* **{उत्तेजित के लिए पंजाबी शहर}** होकर बोलने से परस्पर अशान्ति–ईर्ष्या–द्वेष–झगड़ा ही होता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने सही ढंग से बोलने को एक परखा हुआ धर्म कहा है, **{सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। मनु. 4,138}** यही बात हम आपस के सम्बन्धों में देखते हैं। जब एक सम्बन्धी अपने सम्बन्ध के अनुरूप रिश्ते को निभाता है, तो दोनों का सम्बन्ध सुदृढ़ होता है और दोनों सुखी, प्रसन्न होते हैं। अतः धर्म पुल या नौका की तरह सहायक होकर जीवन यात्रा, कार्य को सरल, सुखद बना देता है।

ऐसा सुखदायक धर्म आज सहायक होने के स्थान पर पीछे धकेलने वाला अधिक बना दिया गया है। यहाँ पहली बात तो यह है, कि धर्म एक न हो कर अनेक हैं, जिन में परस्पर अनेक तरह के विरोध, खींच–तान, घृणा, ईर्ष्या–द्वेष का व्यवहार चल रहा है। दूसरी बात यह है, कि धर्म के भक्ति, पूजा–पाठ, तीर्थ जैसे एक से शब्द भी अलग–अलग रूप रखते हैं। जैसे कि प्रत्येक धर्म में ईश्वरभक्ति, इष्टभक्ति का सर्वप्रथम स्थान है, जिस से भक्त भगवान से जुड़कर दीपक की तरह प्रकाशमान हो जाए। पर आज ईश्वर, इष्टदेव के नाम पर एक लम्बी लाईन लग गई है, जब कि ईश्वर को मानने वाले सारे यह मानते हैं, कि इस दुनियाँ को बनाने–चलाने वाला ईश्वर ही है। सारे संसार में सूर्य, जल, वायु की एक ही व्यवस्था है और संसार के प्राकृतिक पदार्थ अन्न, फल, शरीर आदि सर्वत्र एक से ही हैं। अतः इन प्राकृतिक पदार्थों की एकरूपता और एक व्यवस्था से एक ही ईश्वर सिद्ध होता है, पुनरपि ईश्वर के नाम पर या ईश्वर रूप में अनेक देवी–देवता, अवतार, गुरु, पीर, बाबा, माता, महापुरुष तथा मड़ी–मसान आदि आए दिन नए से नए यहाँ जुड़ते जा रहे हैं। तब किस–किस को पूजें और किस–किस को छोड़ें ? क्योंकि हर एक की पूजा की सामग्री, प्रक्रिया, व्रत, कथा, पर्व अलग–अलग हैं। एक समय में एक को ही अपनाया जा सकता है।

दूसरी सोचने वाली बात यह है कि भक्ति, पूजा व्यापार बनते जा रहे हैं। कुछ ने दूसरों की जगह पूजा, भक्ति करने का धन्धा अपना लिया है। भक्ति, पूजा–प्रेरणा, हृदयशुद्धि का माध्यम न बन कर हर प्रकार की इच्छा पूर्ति और पाप माफी या जीवन की सफलता,उद्धार का साधन, जीवन का उद्देश्य बन चुकी है। तभी तो यह कहा जाता है–**'कलियुग नाम आधारं', 'सो सुखी जो नाम आधारं', 'हरिनाम सिमर बने तेरे बिगड़े कामं'** ऐसे ही सच्चा–सुच्चा बनाने वाले धर्म के तीर्थयात्रा, देवदर्शन, जप–तप, स्मरण–ध्यान, स्नान, व्रत, कथा, पर्व आदि की आए दिन संख्या बढ़ती जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति क्या–क्या करे? क्या–क्या न करे? जैसे कि हर दिन के अर्थात् सोम, मंगल या एकादशी आदि के व्रत, उपवास की अनोखी से अनोखी महिमा बताई जाती है। तब सब को मानने पर व्यक्ति प्रायः बिना खाए ही रहेगा, ऐसी स्थिति में व्यक्ति कुछ कार्य करने में समर्थ कैसे होगा ?

जब कि धर्म का सीधा सा रूप है – धृति, क्षमा, दया, सचाई, ईमानदारी आदि अर्थात् इन बातों को व्यवहार में लाना। जब कोई व्यक्ति ईमानदार, संयमी, स्नेही, परोपकारी बनता है, तो उसका और समाज का जीवन सुखी, सरल होता है। पर आज धर्म के रूप में अनेक तरह की निशानियाँ, चिहनों के धारण को महत्त्व दिया जाता है। इन्हीं के होने पर उस–उस धर्मवाला होने की पहचान की जाती है। आपस में उस–उस धर्म के रूप में उन्हीं से एक दूसरे को अलग–अलग माना जाता है और धर्म के नाम पर परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर–विरोध का रूप सामने लाया जा रहा है।

इस का एक प्रमुख कारण यह है कि आज धर्म शब्द सामने आते ही उसे एकदम हिन्दुधर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म आदि के रूप में लेते हैं। धर्म के नाम से प्रचलित इन सभी में धर्म के चार तत्त्व, रूप प्राप्त होते हैं। जैसे कि–

1. **नीति तत्त्व,** आचार, सदाचार
2. **कर्मकाण्ड**=पूजापाठ, भक्ति, उपासना, व्रत, तीर्थ, पर्व, स्नान, नाम, जप, स्मरण, ध्यान, इष्टदेव दर्शन आदि।
3. **मान्यता, विश्वास** अर्थात् अपने–अपने इष्टदेव के दर्शन, धर्मग्रन्थ के पठन से सिद्धि, पुण्य मानना, किसी विशेष वस्तु को पवित्र समझाना। बिना किसी कारण–आधार के किसी बात को मानना, इस तरह मानने से वह वह बात मान्यता कहलाती है। ऐसे ही बिना किसी कारण, आधार के किसी से कुछ सिद्धि होने का विश्वास किये जाने से वह–वह बात विश्वास कहलाती है।
4. **दर्शन, सिद्धांत** जैसे ईश्वर को सर्वव्यापक मानना !

ये चारों बातें सभी धर्मो में किसी न किसी मात्रा में अवश्य मिलती हैं। सभी प्रचलित धर्मों के अन्दर चार में से नीति–तत्त्व को छोड़ कर तीन बातों में बहुत अधिक भिन्नता मिलती है इसीलिए आपस में बहुत सारे मतभेद सामने आते रहते हैं, जिस के कारण प्रायः आपस में टकराव भी होता रहता है।

हाँ, धर्म का आचरण, सचाई, अच्छाई वाला पक्ष ऐसा अवश्य है, जिस में मतभेद बहुत कम हैं, फिर भी कर्मकाण्ड, विश्वास वाली बातों के कारण आपस में मतभेद सदा उभरा रहता है या इन मतभेदों से परस्पर घृणा, ईर्ष्या, विवाद की सम्भावना बनी रहती है।

इस पर स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उभरता है, कि धर्म के सम्बन्ध में यह सारा क्यों होता है ? जब इस की गहराई में जाने का प्रयास करते हैं, तो स्पष्ट होता है, कि एक तो व्यक्ति के स्वभाव, रुचि की भिन्नता और स्वार्थ के कारण जहां मतभेद उभर आते हैं, वहां धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है इसलिए भी मतभेद हो जाता है, जैसे कि आचरण, कर्मकाण्ड, दर्शन, आदि के लिए अलग–अलग धर्म शब्द का जहाँ प्रयोग होता है, वहां स्वभाव, देव, ढंग आदि के अर्थ में भी यह प्रयुक्त होता है। **{इसके विशेष विवेचन के लिए देखें लेखक की पुस्तक 'सरल सुखी जीवन'।}**

शास्त्र

'सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्, यस्य नास्त्यन्ध एव सः' हितोपदेश–प्रस्तावना। जीवन को सरल, सुखी बनाने वाला, दूसरा साधन है–शास्त्र। शास्त्र का सीधा सा अर्थ है सीधी राह बताने वाला, क्योंकि किसी बात का पता लगने पर ही व्यक्ति कुछ करने में या कहीं जाने में समर्थ होता है। अतएव विद्या, ज्ञान की प्रकाश, आँख से उपमा दी जाती है और इसीलिए कहा जाता है–**संशयों, सन्देहों को दूर करके छिपी हुई बात को बताने वाला ही शास्त्र कहलाता है।** अतः पढ़ा–लिखा आँखों वाले की तरह होता है हाँ ! जिसके पास शास्त्र रूपी आँख नहीं है, वह अन्धे की तरह ठोकरें ही खाता रहता है, अर्थात् असफल होता है। आज के विकसित युग में तो विशेष रूप से किसी यन्त्र, यान को समझने के बाद ही व्यवहार में लाकर उससे लाभ उठा सकते हैं। व्यवहार की बातों का ज्ञान गुरु, शास्त्र और रिवाज से होता है, अतः इन तीनों की सार्थकता अच्छा ज्ञान कराने में ही है।

अपनेपन के कारण प्रत्येक अपने शास्त्र को पूर्ण, सत्य, निष्कंलक मानता है, उसके लिए अनेक तर्क तथा प्रमाण देता है और शास्त्रार्थ करता है।

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्,
तदा सर्वज्ञोऽ स्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित् किञ्चिद् बुधजन सकाशादवगतम्,
तदामूर्खो ऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

नीतिशतक

आज धर्मशास्त्रों की संख्या सेंकड़ों में है और उनके साथ लगते शास्त्रों की भी गिनती की जाए तो लाखों में पहुँच जाती है। तब किस–किस को पढ़ पाए ? इससे भी बड़ी समस्या यह आती है, इनकी बातों में परस्पर विरोध मिलता है, कोई पूर्व में ले जाना चाहता है, तो कोई पश्चिम को। जैसे कि शास्त्रों में अपने–अपने नामों की बड़ी महिमा भरी हुई है। एक समय में व्यक्ति एक नाम को ही एकाग्रता के लिए अपना सकता है। हाँ, नाम स्मरण, जाप से एकाग्रता, हृदयशुद्धि ही हो सकती है, न कि हर इच्छा की पूर्ति या पाप माफी। जब कि आज नाम स्मरण की अनेक कहानियाँ फैला दी गई हैं, कि इस इस नाम के स्मरण से यह–यह सिद्धि अमुक को प्राप्त हुई है।

हाँ, कुछ धर्म शास्त्रों में प्रकृति के नियमों से विरुद्ध बातों का वर्णन मिलता है। जैसे कि पृथ्वी को चपटी बताना और सूर्य द्वारा पृथिवी की परिक्रमा करना। ऐसे ही अनेक शास्त्रों में असम्भव, परस्पर विरुद्ध बातों की कल्पना की गई है जैसे कि अवतारवाद को लेकर उनके जन्म के

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

मैंने ऋषि दयानन्द को देखा

● डॉ. भवानी लाल भारतीय

> लेखक की पुस्तक 'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' में उन आर्य विद्वानों के संस्मरण संकलित हैं जिन्होंने ऋषि दयानन्द के साक्षात् दर्शन किये। उन्हीं में एक है 'दीवान बहादुर हरविलास सारडा' इनके द्वारा लिखित ऋषि जीवनी भी एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है
>
> –सम्पादक

दीवान बहादुर हरविलास सारडा

स्वामी दयानन्द जिस शहर में जाते, वहाँ अनेक व्याख्यान दिया करते। मुझे स्वामी जी के अजमेर आने पर दो तीन बार उनके व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दो बार उनके व्याख्यान नहर मौहल्ले में स्थित गजमल जी के नोहरे में हुए, जिन्हें सुनने के लिए मैं अपने पिता जी के साथ जाता था। मेरे आदरणीय पिता संस्कृत के विद्वान् धार्मिक वृत्ति वाले तथा अद्वैत वेदान्त में प्रगाढ़ आस्था रखते थे। गवर्नमेंट कालेज, अजमेर में अपनी सेवा देने के पश्चात् वे अपना अवकाश का समय विद्वान् संन्यासियों के सान्निध्य में गुजारते थे। जब स्वामी जी अजमेर आये तो मेरे पिता जी नित्य उनसे भेंट करने जाते थे।

स्वामी जी के दर्शन करने का सब से पहला अवसर वह था जब मेरे पिता जी एक रविवार को प्रातः मुझे उनके समीप ले गये। उस समय स्वामी जी सेठ मूलचन्द नेमीचन्द सोनी की नसियाँ (जैन मन्दिर) के निकट बैनी सेठ फतहमहल भड़गतिया की कोठी के पूर्व दिशा के बरामदे में अकेले ही खड़े थे। उन्हें प्रणाम कर हम बैठ गये। वे दिव्याकृति तथा दीर्घाकार पुरुष थे। उनका चेहरा दीप्तियुक्त था। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं क्या पढ़ता हूँ। मैंने एक ही शब्द में उत्तर दिया–'सिद्धा'। मेरे पिता जी ने सिद्धा का अर्थ उन्हें बताया। स्वामी जी ने मुझे आशीर्वाद दिया और मेरे पिता जी उन से दार्शनिक चर्चा करने लगे।

दूसरी बार उनके दर्शन करने का अवसर 1878 में तब आया, जब वे पुष्कर के कार्तिकी मेले में आये। यह मेला प्रतिवर्ष पुष्कर कार्तिक के अन्तिम पाँच दिनों (अक्टूबर–नवम्बर) में लगता है। उस समय निकट तथा दूर के लोग पुष्कर के पवित्र सरोवर में स्नान करने के लिए एकत्र होते हैं। उस समय वे कोटा घाट पर ठहरे थे। हमने उन्हें बरामदे में एक चटाई पर बैठे देखा। उन्हें शायद जुकाम था, नाक बह रही थी और बहुत से लोग प्रश्न पूछते हुए उन्हें घेर कर बैठे थे।

मैं एक उदाहरण देकर बताऊँगा कि किस प्रकार व्यंग्यात्मक कथन के द्वारा प्रतिपक्षियों की दुर्बलताओं को उघाड़ कर रख देते थे। अजमेर के लाखन कोठरी मौहल्ले में पं. भागराम के घर पर एक दिन सवेरे ख्वाजा साहिब की दरगाह के सज्जादनशीन के चाचा मीर शफी हुसैन तथा पं. शिवनारायण (कालान्तर में महामहोपाध्याय) कुछ अन्य हिन्दू एवं मुसलमान सज्जनों के साथ बैठे हुए धार्मिक चर्चा कर रहे थे। मुसलमान लोग हिन्दुओं के धार्मिक अन्धविश्वासों की खिल्ली उड़ा रहे थे। स्वामी जी इन सब को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। अब उन्होंने मीर शफी हुसैन की ओर मुखातिब होकर कहा, तुम दाढ़ी रखते हो और पं. शिवनारायण को सम्बोधित कर कहा, तुम चोटी रखते हो। मैं तुम्हें दाढ़ी से पकड़ लूँगा और तुम्हारी चोटी खींचूँगा किन्तु मेरे न दाढ़ी है और न चोटी। तुम मुझे नहीं पकड़ सकते।

उनके व्याख्यानों के समय की एक घटना का मुझे आज भी स्मरण है। एक सायं गजमल जी के नोहरे में व्याख्यान सुनने के बाद अधिकांश लोग तो चले गये किन्तु कुछ लोग उन से शंका–समाधान करने के लिए पीछे रह गये। रात के ग्यारह बज गये और स्वामी जी शंका–समाधान समाप्त कर, जिस उद्यान में वे ठहरे थे वहाँ जाने के लिए तैयार हुए उस समय मैं भी वहीं था। लगभग पन्द्रह या सोलह व्यक्ति रहे होंगे। जब हम लोग नोहरे के दरवाज़े की ओर आये तो पता चला कि दरवाज़ा बन्द है। कुछ लोगों ने आगे बढ़कर दरवाज़ा खोलने का प्रयास किया, किन्तु वह नहीं खुला। कुछ और लोग भी आगे आये। हम स्वामी जी के पास दो तीन जने ही रह गये। उन लोगों ने दरवाज़ा खोलने की पुरज़ोर कोशिश की, किन्तु शायद वह इस तरह जकड़ा हुआ था कि खुला ही नहीं। उन सब लोगों को दरवाजे के साथ ज़ोर आजमाइश करते हुए देखकर स्वामी जी मुस्कराये और बोले–तुम लोग छोकरों के छोकरे हो। दरवाजे को छोड़कर दूर हो जाओ। उन्होंने पहले तो दरवाजों को झिंझोड़ा और फिर अपने बाँये पैर तथा बाँये हाथ से दरवाजे को जोर से दबाया, अपने शरीर का पूरा ज़ोर उस पर डाल दिया। कुण्डे की जंज़ीर को पकड़कर एक ज़ोर के धक्के से दरवाज़े को खोल दिया। हम लोग तो उन की इस शारीरिक शक्ति को देखकर ससंभ्रम आश्चर्य और श्रद्धा से भर गये।

जब स्वामी जी जोधपुर में विष दिये जाने के पश्चात् अस्वस्थ होकर 27 अक्टूबर 1883 को अजमेर लाये गये तो उन्हें भिनाय की कोठी में ठहराया गया। जब यह समाचार हमें मिला तो मैं अपने मित्र रामगोपाल तथा चचेरे भाई रामविलास के साथ अपराह्न में उन्हें देखने के लिए भिनाय की कोठी गया। हम लोग सहपाठी थे और गवर्नमेंट कालेज की मैट्रिकुलेशन की कक्षा में पढ़ते थे।

मेरी आयु 16 वर्ष की थी, रामविलास अठारह वर्ष के तथा रामगोपाल बीस बरस के थे। हम लोग सोचते थे कि स्वामी जी स्वस्थ हो जायेंगे तो उनके व्याख्यान सुन सकेंगे। उनका इलाज अजमेर की सरकारी सेवा में कार्यरत एक पंजाबी डॉ. लक्ष्मणदास कर रहे थे। स्वामी जी की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ। 29 अक्टूबर को उन की दुर्बलता चिन्ताजनक स्थिति पर पहुँच गई और सुधार की आशा नष्ट हो गई। दूसरा दिन दीपावली का था। हम लोग उस दिन भी अन्य दिनों की तरह भिनाय की कोठी गये और देखा कि सारा वातावरण उदासी से भरा हुआ है और लोगों ने सारी उम्मीदें छोड़ दी हैं। जब सायं लगभग 6 बजे स्वामी जी ने प्राण त्यागे, उस समय भी हम वहीं थे। वह एक करुणापूर्ण तथा गम्भीर दृश्य था। उन्होंने स्वामी आत्मानन्द तथा ब्रह्मचारी रामानन्द को बुलाकर आशीर्वाद दिया तथा उपस्थित लोगों को अपने पीछे आकर खड़े होने के लिए कहा। सभी उपस्थित लोगों को आशीर्वाद देने के अनन्तर उन्होंने गायत्री का उच्चारण किया तथा कुछ काल के लिये समाधिस्थ हो गये। पुनः लेट गये। उन्होंने जो शब्द उस समय कहे वे थे–**'दयामय, सर्वशक्तिमान् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा, तूने अच्छी लीला की।'** यह कह कर वे करवट के बल लेटे, एक दीर्घ निश्वास लेकर छोड़ दिया। यही उनका अन्तिम श्वास था।

हम तीनों रोते हुए घर लौटे। हिन्दुओं के लिए दिवाली का दिन अत्यन्त शुभ तथा सौभाग्य का समझा जाता है। उस दिन हमें आँसू बहाते देखकर पिता जी ने इस का कारण पूछा। मैंने सुबकते हुए कहा–**"भारत का सूर्य आज अस्त हो गया।"** मेरे पिता जी ने मुझे धैर्य बँधाया, वे जानते थे कि हम लोग भिनाय की कोठी प्रायः जाते रहे हैं।

दूसरे दिन स्वामी जी के नश्वर शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया। 9 और 10 के बीच में एक विमान में उनके शरीर को रखकर श्मशान की ओर शवयात्रा चल पड़ी। आगरा दरवाजे से नगर में प्रवेश कर अन्त्येष्टि का यह जुलूस नया बाजार, कड़क्का चौक, धानमण्डी, दरगाह बाजार, घसेटी डिग्गी होता हुआ ऊसरी गेट आया तथा मलूसर के श्मशान की ओर बढ़ा। स्वामी जी ने अपने स्वीकारपत्र में अपनी अन्त्येष्टि के बारे में जो व्यवस्था लिखी थी, उसी के अनुसार अन्तिम क्रिया की गई। **मैं आरम्भ से ही शवयात्रा में था और अन्य आर्यसमाजियों के साथ मुझे अर्थी को कन्धा देने का अवसर मिला था। यह एक बड़ा विमान था और जब हम लोग शहर के भीतर से गुजर रहे थे तो मैंने उसे उठाने वालों को गिना था। ये लोग 16 थे।** इस तथ्य ने मुझे उस बात की याद दिला दी जो उन्होंने अजमेर में ही एक व्याख्यान में बाल–विवाह की निन्दा तथा ब्रह्मचर्य की प्रशंसा में कही थी। उन्होंने कहा था कि जो लोग ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते तथा बालविवाह के शिकार हो जाते हैं वे दुर्बल तथा क्षीण शरीर रहते हैं। अपने बारे में स्वामी जी ने कहा कि उन्होंने तो पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया है। उनके मृतकशरीर को श्मशान ले जाने के लिए भी कम से कम सोलह आदमियों की जरुरत होगी।

अजमेर के न्याय उपायुक्त रायबहादुर भागराम स्वामी जी के प्रशंसक तथा अनुयायी थे। उन्होने ही अन्त्येष्टि यात्रा की पूर्ण व्यवस्था की थी और वे स्वयं भी अन्त्येष्टि स्थल पर उपस्थित थे। स्वामी जी की नश्वर काया को अग्नि के समर्पित करने से पूर्व उन्होंने मानवता के प्रति ऋषि की सेवाओं की श्लाघा की तथा संसार के हित के लिए उनके द्वारा आरम्भ किये गये कार्यों को जारी रखने की प्रेरणा दी।

दयानन्द स्मृतिग्रन्थ–1933 में प्रकाशित

अध्यात्मधारा

● डॉ. सुशील वर्मा

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। ऋग्वेद में मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी गई है–**'मनुर्भव'।** यही कारण है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज का लक्ष्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** निर्धारित कर विश्व के प्रत्येक मानव को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाने का संकल्प किया था। **'आर्योद्देश्यरत्नमाला'** में मनुष्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि जो विचार किए बिना किसी काम को न करे उसका नाम मनुष्य है। मनुष्य का विचारशील एवं मननशील होना आवश्यक है। जीवात्मा इन्द्रियों के वश में होकर बड़े–बड़े दोषों को प्राप्त होता है और जब इन्द्रियों को अपने वश में कर लेता है जितेन्द्रिय हो जाता है तभी सिद्धि को प्राप्त होता है। आचरण ही मनुष्य की कसौटी है। मन का सन्देश –

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

मनु. 5.109

जल से शरीर के बाह्य अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या एवं तप से जीवात्मा, ज्ञान, विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होती है।

आज अधिकतर लोग उस बात से अनभिज्ञ हैं कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है ? हमारे समस्त वेद–शास्त्रों ने इस मानव योनि को बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं देव–दुर्लभ बताया है क्योंकि इसी योनि में हम यज्ञ, सत्संग, दान–पुण्य, साधना आदि कर सकते हैं। मानव जीवन का लक्ष्य उपासना करके उस परम पिता परमात्मा के सानिध्य को प्राप्त करना बताया गया है। *केनोपनिषद्* (2. 5) का कथन है कि बुद्धिमान लोग इसी जन्म में उस परमात्मा की खोज करके अमरत्व को प्राप्त हो जाते हैं परन्तु जो उसे नहीं जान पाते, तो उनका तो सर्वनाश ही समझिए। हमें चिन्तन करना चाहिए।

परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए हमें अपने स्वरूप को जानना होगा। यदि हम मात्र शरीर को ही अपना आप समझते हैं तो यह दौड़ भौतिक पदार्थों तक ही सीमित होगी। परन्तु जिस दिन यह समझाया जाएगा कि हम शरीर के अतिरिक्त कुछ और भी हैं तो हमें आत्म स्वरूप को पहचान कर आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होना होगा। शारीरिक तौर पर हम भोगों (भौतिक भोगों) की तरफ ही दौड़ते हैं। भोग स्वयं ही पुकार–पुकार कर कह रहे होते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने या सामर्थ्य नहीं है। भोगों की लालसा और अधिक बलवती होती जाती है।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः,
तृष्णान जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।

(भर्तृहरि)

जब हमें यह सत्य प्रतीत होने लगे कि भौतिकता में सच्चा और स्थायी सुख नहीं है तब हम आध्यात्मिकता की तरफ सोचना विचारना प्रारम्भ करते हैं जहाँ आनन्द और तृप्ति है। ऋषि मुनियों ने अमरत्व को प्राप्त किया है तो यह आध्यात्मिकता की ओर सतत प्रयास का परिणाम है। मूलशंकर से दयानन्द की यात्रा उसी तड़प और वैराग्य के कारण ही पूर्ण हो पाई। शुद्ध चैतन्य से दयानन्द बन आनन्द को प्राप्त किया। उनके जीवन में भी उन्हें भौतिकता की ओर आकर्षित करने के लिए क्या–क्या प्रलोभन नहीं दिए गए। मठाधीश बनने का प्रलोभन, भगवान शिव का अवतार घोषित करने का प्रलोभन। परन्तु वह मानव से महामानव का स्वरूप उसी भावना, सुदृढ़ निश्चय, आस्था एवं विश्वास के कारण ही जी पाया जिस रास्ते पर कठोपनिषद् का नचिकेता स्थिर रहा। लम्बी आयु का वरदान, सुन्दर स्त्री, पुत्र–पौत्रादि सेविकाओं, सेवकों की प्राप्ति का वरदान परन्तु ये प्रलोभ्झन तो किसी भी व्यक्ति को पथ से डिगाने के लिए पर्याप्त थे परन्तु आध्यात्मिता की जो अग्नि प्रज्ज्वलि हो चुकी थी, उसे बुझाना आसान नहीं था और दयानन्द के अन्दर भी यही आत्माग्नि अपना स्वरूप ले चुकी थी जिस कारण वह दयानन्द कहलवाया। मनुष्य को ऐसे आदर्श पुरुषों का अनुकरण करना आवश्यक है क्योंकि वेद का आदेश है कि जो व्यक्ति दुःख कष्ट क्लेश और मृत्यु से बचना चाहता है वह उस परमात्मा को जाने, उसी को जानने से अमरत्व की प्राप्ति हो सकती है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात।
तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः
पन्था वियतेऽयनाय।।

यजु. 31.18

उसका आश्रय ही मोक्ष, सुखदायक है, जिसका न मानना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है। उसी की आज्ञा पालन में तत्पर रहें – **"नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"** और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इसीलिए **"यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः।"** यही वेद का स्पष्ट आदेश है कि सब प्रकार के दुःखों से छुटकारा देने वाला केवल मात्र वह परमपिता परमात्मा ही है। परमात्मा की कृपा एवं सान्निध्य प्राप्त करने के लिए जीवन पद्धति को बदलना आवश्यक है। कठोपनिषद् का यह उपदेश–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।

कठोप 3.3

इन्द्रियाँ घोड़े तथा मन लगाम है, बुद्धि सारथी है, आत्मा इस रथ का स्वामी है। इसलिए आत्मा जिधर कहे बुद्धि को उसी ओर चलना चाहिए। जिस दिन व्यक्ति इस क्रम का दृढ़तापूर्वक अनुपालन करेगा वह उसी समय से अमरत्व की दिशा में अग्रसर होकर लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।

ऐसी भावना एवं दृढ़ता व स्थिरता के लिए याद करें ईशोपनिषद् का प्रथम मन्त्र–**"ईशावास्यमिदं......कस्य स्विद्धनम्"।** महात्मा नारायण स्वामी ने इस मन्त्र में मानव के लिए तीन कर्त्तव्यों का वर्णन किया है– (1) परमात्मा को सर्वव्यापक सर्वत्र परिपूर्ण मानकर पापाचरण से बचना। (2) संसार के भोग यद्यपि मनुष्यादि जीवधारियों के लिए है, किन्तु विचारशील, प्रज्ञावान मनुष्य को चाहिए कि वह निरासक्त भाव से सांसारिक पदार्थों का उपभोग करे। (3) स्वयं को लोभ वृत्ति से पृथक् करने का है। इसी प्रकार यजुर्वेद का 40.12 मन्त्र **"अन्धन्तमः प्रविशन्ति.....विद्यायां रताः।"** अर्थात् जो मात्र कर्म में तत्पर है और ज्ञान की उपेक्षा करता है वे अन्धकार में पड़े रहते हैं। **"अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।"** सत् कर्म के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त करो और ज्ञान के द्वारा अमृतत्व को प्राप्त करो।

यही है अध्यात्म का रास्ता, उस परमपिता परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इसीलिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं– अग्ने नय सुपथा राये...।

मा. मूलचन्द्र वर्मा गली
फाजिलका – 152123
मो. 7009822720

☞ पृष्ठ 06 का शेष

चक्रव्यूह में आज का ...

सम्बन्ध में अनोखी–अनोखी बातें प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए कृष्णजन्म को ही लेते हैं।

देवकी के विवाह की विदा वेला में अकाशवाणी होना। फिर सातवें गर्भ का वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के यहाँ परिवर्तित होना। विष्णु का कृष्णरूप में और लक्ष्मी का यशोदा के यहाँ जन्म लेना। जन्म होते ही बेड़ियों और दरवाज़ों का स्वतः खुल जाना। गोकुल ले जाते समय यमुना जल का पैर छूने का लिए उभरना, फिर नीचे उतरना।

पूतना आदि का वध, कालिया मर्दन या उन का आङ्गिरस आदि के शापवश उस–उस रूप में होना और कृष्ण स्पर्श से उद्धार होना। इस प्रकार अवतार की कल्पना को सम्भव बनाने और अवतरित के महत्त्व को दर्शाने के लिए आख्यानों पर आख्यान गढ़े गए। जिनमें न तो प्रकृति नियमों का ध्यान रखा गया और न ही यह कल्पना सम्भव है, इस को विचार में रखा गया है।

एक विचारक जब निष्पक्ष रूप से ऐसे शास्त्रों को पढ़ता है, तो अन्त में यह लिखने के लिए विवश हो जाता है। जैसे कि–*विशप जोन्स राबिन्सन* अपनी पुस्तक–*अरनेस्ट टू गाड* में लिखते हैं। "आज दिन ईसाइयत के घिसे पिटे चित्रणों द्वारा समाज की जो हानि हो रही है उसको नकारा नहीं जा सकता। धर्म के सम्बन्ध में तर्कशून्य असत्य भ्रान्त विचारों की अपेक्षा आज ईश्वर और स्वर्ग के सम्बन्ध में परिमार्जित एवं तर्क संगत विचारों की आवश्यकता है। जिसका कि बाईबल में अभाव है। चौथे आसमान पर ईश्वर रहता है, केवल ईसा ही उनका इकलौता बेटा, कुमारी मरियम ने कुमारी रहते हुए भी अपने गर्भ से ईसा को जन्म दिया। ईसा स्वयं ईश्वर है। बाबा आदम तथा माता हव्वा का स्वर्ग से उतरना, कार्टूनों की चित्रकथा से अधिक नहीं।"

मुहम्मद अली अपने कुरान के अंग्रेज़ी अनुवाद में लिखते –As they are narrated in the Bible. The same are narrated in the holy Koran. अर्थात् जो कुछ बाईबल में लिखा है, वही कुछ कुरान में लिखा है। आज शास्त्रों की संख्या का पारावार नहीं, अतः कोई चाहते हुए भी अपनी अल्प आयु और स्वल्प शक्ति के कारण इन सब को पढ़ नहीं सकता। इनमें प्रकृति नियमों से विरुद्ध, असम्भव कल्पनाओं का अम्बार और परस्पर विरुद्ध वर्णन होने से अन्त में यही कहना पड़ता है, कि ऐसी स्थिति में एक यही रास्ता रह जाता है, कि जो–जो सार रूप जचती बातें हैं, उन्हीं को अपनाएँ, अन्य बेतुकी बातों को बिना झिझक छोड़ने से कोई सुखी रह सकता है।

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर 146001

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु-भक्ति

निर्मल हो जाते हैं। **(मनु)**

87. यह निश्चित है कि जैसे अग्नि में ईंधन और घी डालने से वृद्धि होती है, वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त नहीं होता, किन्तु बढ़ता ही जाता है, इसलिए मनुष्य को विषयासक्त न होना चाहिए। **(सत्यार्थप्रकाश)**
88. किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है, उसी समय फल भी नहीं होता इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते, तथापि निश्चय जानो कि अधर्माचरण धीरे–धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है।
89. जो प्राप्त के अयोग्य की कभी भी इच्छा न करे, नष्ट हुए पदार्थ पर शोक न करे, आपत्काल में मोह को प्राप्त न हो, अर्थात् व्याकुल न हो, वही बुद्धिमान् पण्डित है। **(मनु)**
90. जब तक संसार हमारे मन में बसा हुआ है, तब तक भगवान् दूर प्रतीत होते हैं। जैसे ही संसार हटा, समझो कि मन में भगवान् का प्रकाश आया। बुल्लेशाह ने एक बार प्याज की पनीरी लगाते हुए कहा था–

बुल्ला रब दा की पाणा।
एधरों पुटना ओधर लाणा।।

91. प्रभु का विस्मरण ही मृत्यु है, प्रभु का स्मरण ही जीवन है–**यस्यच्छाया अमृतं यस्य मृत्युः।**
92. घट–शुद्धि के लिए ओम् नाम का जप बहुत आवश्यक है। अनुभवी जनों ने बताया है कि नाम–जप के साथ ओम् का ध्यान भी किया जाए तो बहुत शीघ्र सिद्धि होती है।
93. नित्य धर्म का संचय करते चले जाओ, धर्म ही की सहायता से बड़े–बड़े दुस्तर दुःख सागर को जीव तर जाता है। **(मनु)**
94. जो मिथ्या भाषण करता है, वह सब चोरी आदि पापों के करनेवाला है। **(मनु)**
95. प्रभु प्रेमी की वाणी तथा नेत्र आदि से प्रेम की वर्षा होती रहती है। उसका मार्ग प्रेम से पूर्ण होता है।
96. जो देहधारी है, वह दुःख–सुख का बहुत ध्यान न रक्खे। **(छान्दोग्य)**
97. मछली का जल में, पपीहे का मेघ में, चकोर का चन्द्रमा में जैसा प्रेम है, वैसा ही हमारा प्रेम प्रभु में हो–एक पल भी उसके बिना चैन न मिले, शान्ति न मिले।
98. मानव–शरीर भव–सागर से पार होने के लिए एक प्रकार की सुन्दर नैया है, यह बन्धन का हेतु नहीं।
99. वैदिक विचार के अनुसार हमें शरीर के प्रति यह भाव रखना चाहिए कि यह सप्तऋषियों की तपोभूमि है और इसे किसी प्रकार से दूषित नहीं होने देना चाहिए।
100. **हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृ–पयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।**

हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो उत्तम काम हम करते हैं वे सब आपके समर्पण हैं जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि हमको प्राप्त हो।

101. **"भगवान् के प्रति किसका प्रेम सच्चा है"**–यह प्रश्न था, जिस पर दो प्रभु–प्रेमियों में बातचीत होने लगी–

एक ने कहा–भगवान् के भेजे हुए दुःख को जो स्थिरता से सहन नहीं कर सकता वह सच्चा प्रेमी नहीं।

दूसरे ने कहा–किन्तु इसमें अभिमान की गन्ध आती है।

पहले ने कहा–वह सच्चा प्रेमी नहीं, जो दुःख के लिए भगवान् को धन्यवाद न दे।

दूसरा– इससे भी और ऊँचा दर्जा है।

पहला– वह सच्चा प्रेमी नहीं, जो दुःख में सुख की प्रतीति न करे।

दूसरा– यह सबसे उत्तम नहीं है। सबसे उच्च कोटि का प्रेमी वह मनुष्य है जो भगवान् में ऐसा लीन रहे कि उसे दुःख की खबर ही न हो।

इसके साथ ही महात्मा आनन्द स्वामी विरचित 'प्रभुभक्ति' नामक पुस्तक सम्पूर्ण हुई। आशा है पाठकों ने इसका पूर्ण आनन्द लिया होगा। –सम्पादक

☞ पृष्ठ 04 का शेष

ईश्वर - अस्तित्व का ...

गाली से, न गोली से, कश्मीर की समस्या सुलझेगी। कश्मीर की समस्या सुलझेगी केवल गले लगाने से।" इससे पहिले मोदी जी ने कुरान समर्थित पत्थरबाजी के लिये उकसाए गए, उकसाए जाने वाले युवकों के लिये कहा था–**"इनके एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में कम्प्यूटर होना चाहिए। एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में तलवार वाला इस्लाम का सदियों पुराना नारा खत्म हो जाना चाहिए।"**

इसी भाषण में मोदी जी ने कहा–"**आतंकवाद के खिलाफ कोई नरमी नहीं बरती जावेगी। आतंकवादियों को हमने बार–बार कहा है कि मुख्यधारा में आइए जो हर किसी के जीवन में नई ऊर्जा की बात भर सकती है। आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक शक्तियों के एक जुट हो जाने भी कही।"** मुख्यधारा मूलतत्वों का विशद विश्लेषण तो उन्होंने नहीं दिया पर एक तत्व का उल्लेख कर गए जिसे उस अर्थ में जोड़ा जा सकता है। मोदी जी ने कहा–**"तीन तलाक से पीड़ित महिलाओं के साथ देश खड़ा है। हम इसके खिलाफ संघर्ष करने वाली महिलाओं को नमन करते हैं।"** धातव्य है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने एक साथ कहे– तलाक, तलाक, तलाक को गैर कानूनी घोषित कर दिया है।

यह तो हुआ मुख्यधारा में जोड़ने का एक कदम। दूसरा कदम धर्मांतरण रोकने के सम्बन्ध में निर्देश जारी किए गए–धर्मांतरण के पहिले जिलाधीश की अनुमति लेना अनिवार्य होगा यद्यपि यह आदेश पहिले भी था लेकिन अब दूसरा पालन सख्ती से होगा। आदिवासी बहुल झारखण्ड सूचना जारी कर चुका है।

मुख्य धारा में जोड़ने की सरकारी पहल हो चुकी है। मुख्यधारा में मुस्लिम समुदाय को जोड़ने के लिये अन्य अनेक कदम धार्मिक संस्थाओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को उठाने पड़ेंगे। उदाहरण स्वरूप सम्पूर्ण देश मुस्लिम विवाह – तीन तलाक, हलाला आदि की भयावहता देख चुका है, समझ चुका है। हलाला की गोपनीयता उसकी अमानवीय त्रासदी ग्रसित मुस्लिम महिलाओं को छटपटाते हुए देख चुका है। केवल महिलाओं पर ही असर नहीं पड़ता पूरा परिवार नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे में क्या हिन्दु समाज आएगा जो स्वयं ही जाति–प्रथा से भयंकर रूप से ग्रसित है, दहेज प्रथा अनेक सुशिक्षित युवतियों के विवाह का सपना रौंद चुकी है यह स्थिति 90 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र व मध्यमवर्गीय शहरी क्षेत्र में जड़ें जमाए हुए है। कभी हुआ करता था पंजाब जो अफगानिस्तान तक फैला हुआ था जिसमें सम्पूर्ण अविभक्त, पंजाब, हिमाचल व हरियाणा राज्य शामिल थे। उत्तरी आक्रामक शक्तियाँ इस उर्वरा भूमि में बस गई – रच–बस गई हैं। उस समय पंजाब का हाजमा बिल्कुल ठीक था। वैसे भी पुरुष – महिला अनुपात में महिलाओं की कमी रही है। हरियाण ा में बहुत कमी है ! क्या हरियाणा आगे आवेगा ? क्या अन्य प्रान्तों में जागरूक युवकों के संगठन बनेंगे जो सब बाधाओं को पार कर आगे आने की हिम्मत बटोर पाएँगे ? क्या साधुसन्त – मठाधीश भी मोदी जी की बात पर ध्यान देंगे। **क्या सर्वाधिक प्रगतिशील आर्यसमाज इस क्षेत्र में कुछ कदम उठाएगा ?**

कुरानी कट्टरपन को कम करने के लिये शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में स्वयं सेवी संस्थाएं काम करने का मन बनाकर ठोस कदम उठावेंगी ? सम्पूर्ण देश में डी.ए.वी शिक्षण संस्थाओं की उत्तमकोटि की शिक्षा एवं वैदिक संस्कार देने की सर्वाधिक ख्याति है ? क्या इन विद्यालयों में, महाविद्यालयों में बिना मौलिक ढाँचे में छेड़छाड़ कर कुछ प्रतिशत मुस्लिम समुदाय के बच्चों को प्रवेश दिए जाने पर विचार किया जा सकता है ?

स्वास्थ्य ऐसा क्षेत्र है जिसमें काम करने की बहुत ज्यादा सम्भावना है। आर्यसमाज सरिता विहार, नई दिल्ली एक एलोपैथिक डिस्पेन्सरी का संचालन प्रशिक्षित, योग्य, एम. बी. बी. एस डाक्टर के अन्तर्गत सफलता पूर्वक कर रही है। इसमें बिना भेद भाव दस रुपये का पर्चा बनवाकर इलाज किया जाता है। अधिकाश दवाईयाँ भी अत्यन्त उचित मूल्य पर मिलती हैं। अनेक दवाई मुफ्त। चिकित्सा सम्बन्धी परीक्षण भी बहुत कम मूल्य पर कराए जाने की व्यवस्था है। आर्थिक भार आर्यसमाज वहन करता है। ऐसा और जगह भी होता होगा। व्यापक प्रचार–प्रसार होने से आर्थिक सहायता भी मिलती है।

ईसाई धर्म के लोग शिक्षित हैं आर्थिक रूप से मजबूत हैं और वर्षों से अपना कार्य कर रहे हैं। लगभग 40 वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के सरगुजा, जो आदिवासी बहुल क्षेत्र था उसमें शिक्षा की शानदार व्यवस्था मैं स्वयं देख चुका हूँ। आलोचना का अधिकार उसे ही है जो ठोस काम करता हो।

मैं इन दोनों धर्मों विशेषकर कुरान अनुयायियों को देश की मुख्य धारा में जोड़ने के प्रयास में मोदी जी का हाथ बटाने का आह्वान करता हूँ। यह राष्ट्र उनके साथ हमारा भी है। वैश्विक शक्तियाँ अपने–अपने राष्ट्रों में यही कर रही हैं। जरा देखिए तो !

22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, पिन–474001 (म.प्र.)

पत्र/कविता

गायत्री अर्थ -गायन

'ओ३म्' हो रक्षक हमारे सब गुणों की खान हो।
अज अमर अद्वैत अव्यय विश्वविद्विद्वान् हो।।
'भूः' सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हो।
आप हे जगदीश ! सब संसार के कल्याण हो।।
'भुवः' सब दुख दूर करते आप कृपा निधान हो।।
'स्वः' सदासुखरूप सुखमय सुखद सुखधि महान् हो।।
'तत्' वही सुप्रसिद्ध ब्रह्मन् वेद वर्णित सार हो।
'देव सवितुः' सर्व उत्पादक व पालनहार हो।
शुभ :वरेण्यं' वरण करने योग्य भगवान्। आप हो।
शुद्ध 'भर्गः' मलरहित भजनीय हो निष्पाप हो।
दिव्यगुण 'देवस्य' दिव्यस्वरूप देव अनूप के।
'धीमहि' धारें हृदय में दिव्यगुण गुणरूप के।।
'धियो यो नः' वह हमारी बुद्धियों का हित करे।
ईश 'प्रचोदयात्' नित सन्मार्ग में प्रेरित करे।
बुद्धि का शुभदान दे अपनी शरण में लीजिये।
वेद पथ का कर पथिक हमको श्अमरश पद दीजिये।।

—अमरसिंह 'अमर' आर्यपथिक

आजादी लाने वालों ने कितने दुःख सहे - अमर हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल के जन्म दिवस 11जून पर विशेष

(मेरी डायरी का एक पृष्ठ - शिव वर्मा)

अशफाक और बिस्मिल का यह शहर कालेज के दिनों में मेरी कल्पना का केन्द्र था। फिर क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बनने के बाद काकोरी के मुखविर की तलाश मे काफी दिनों तक इसकी धूल छानता रहा था। अस्तु, यहाँ जाने पर पहली इच्छा हुई विस्मिल की माँ के पैर छूने की। काफी पूछताछ के बाद उनके मकान का पता चला। छोटे से मकान की एक कोठरी में दुनिया की आँखों से अलग वीर–प्रसविनी अपने जीवन के अन्तिम दिन काट रही हैं। पास जाकर मैंने पैर छुए। आँखों की रोशनी प्रायः समाप्त–सी हो चुकने के कारण पहचाने बिना ही उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और पूछा, "तुम कौन हो ?" क्या उत्तर दें, कुछ समझ में नहीं आया। थोड़ी देर के बाद उन्होने फिर पूछा, "कहाँ से आये हो बेटा ?" इस बार साहस कर मैने परिचय दिया–"गोरखपुर जेल में अपने साथ किसी को ले गयी थी, अपना बेटा बनाकर ?" अपनी ओर खीचकर सिर पर हाथ फेरते हुए माँ ने पूछा, "तुम वही हो बेटा ? कहाँ थे अब तक ? मैं तो तुम्हे बहुत याद करती रही, पर जब तुम्हारा आना एकदम ही बन्द हो गया तो समझी कि तुम भी कही उसी रास्ते पर चले गये।" माँ का दिल भर आया। कितने ही पुराने घावों पर एक साथ ठेस लगी। अपने अच्छे दिनों की याद, बिस्मिल की याद, फाँसी, तख्ता, रस्सी और जल्लाद की याद, जवान बेटे की जलती हुई चिता की याद और न जाने कितनी यादों से उनके ज्योतिहीन नेत्रो में पानी भर आया – वो रो पड़ी। बात छेड़ने के लिए मैंने पूछा "रमेश (बिस्मिल का छोटा भाई) कहाँ है ?" मुझे क्या पता था कि मेरा प्रश्न उनकी आँखों में बरसात भर लायेगा। वे जोर से रो पडी। बरसो का रुका बाँध टूट पड़ा सैलाब बनकर। कुछ देर बाद अपने को सँभाल कर उन्होंने कहानी सुनानी शुरु की।

आरम्भ में लोगों ने पुलिस के डर से उनके घर आना छोड़ दिया। वृद्ध पिता की कोई बँधी हुई आमदनी न थी। कुछ साल बाद रमेश बीमार पडा। दवा–इलाज के अभाव में बीमारी जड़ पकड़ती गई। घर का सब कुछ बिक जाने पर भी रमेश का इलाज न हो पाया। पथ्य और उपचार के अभाव में तपेदिक का शिकार बनकर एक दिन वह माँ को निपुती छोड़कर चला गया। पिता को कोरी हमदर्दी दिखाने वालों से चिढ़ हो गई। वे बेहद चिड़चिड़े हो गये। घर का सब कुछ तो बिक ही चुका था। अस्तु, फाको से तंग आकर एक दिन वे भी चले गये, माँ को संसार मे अनाथ और अकेली छोड़कर। पेट में दो दाना अनाज तो डालना ही था। अस्तु, मकान का एक भाग किराये पर उठाने का निश्चय किया। पुलिस के डर से कोई किरायेदार भी नहीं आया और जब आया तब पुलिस का ही एक आदमी ! लोगों ने बदनाम किया कि माँ का सम्पर्क तो पुलिस से हो गया है। उनकी दुनिया से बचा हुआ प्रकाश भी चला गया। पुत्र खोया, लाल खोया, अन्त में बचा था नाम, सो वह भी चला गया।

उनकी आँखों से पानी की धार बहते देखकर मेरे सामने गोरखपुर की फाँसी की कोठरी घूम गई। काकोरी के चारो अभियुक्तों के जीवन का फैसला हो चुका था–To be hanged by the neck till they be dead. (प्राण निकल जाने तक गले में फन्दा डालकर लटका दिया जाय।) फाँसी के एक दिन पहले अंतिम मुलाकात का दिन था। समाचार पाकर पिता गोरखपुर आ गये। माँ का कोमल हृदय शायद इस बात को सँभाल न सके, यही समझकर उन्हें वे साथ न लाये थे। प्रातः हम लोग जेल के फाटक पर पहुँचे तो देखा कि माँ वहाँ पहले से ही मौजूद है। अन्दर जाने के समय सवाल आया मेरा, मुझे कैसे अन्दर ले जाया जाये। उस समय माँ का साहस और पटुता देखकर सभी दंग रह गये। मुझे खामोश रहने का आदेश देकर उन्होंने मुझे अपने साथ ले लिया। पूछने पर यह कह दिया, "मेरी बहन का लडका है।" हम लोग अन्दर पहुँचे। माँ को देखकर रामप्रसाद रो पड़े, किन्तु माँ की आँखों में आँसुओं का लेश भी न था। उन्होने ऊँचे स्वर में कहा–"मैं तो समझती थीं कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके नाम से अंग्रेज़ सरकार भी काँपती हैं। मुझे नहीं पता था कि वह मौत मे डरता हैं। तुम्हें यदि रो कर ही मरना था तो व्यर्थ इस काम मे आये।" बिस्मिल ने आश्वासन दिया। आँसू मौत से डर के नही वरन् माँ के प्रति मोह के थे। "मौत से मैं नहीं डरता माँ, तुम विश्वास करो।" माँ ने मेरा हाथ पकड़कर आगे कर दिया। यह तुम्हारे आदमी हैं। पार्टी के बारे में जो चाहो इनसे कह सकते हो। उस समय माँ का स्वरूप देखकर जेल के अधिकारी तक कहने को बाध्य हुए कि बहादुर माँ का बेटा ही बहादुर हो सकता है।

उस दिन समय पर विजय हुई थी माँ की और आज माँ पर विजय पाई हैं समय ने। आघात पर आघात देकर उसने उनसे बहादुर हृदय को भी कातर बना दिया है। जिस माँ की आँखों के दोनों ही तारे विलीन हो चुके हों उसकी आँखों की ज्योति यदि चली जाये तो इसमे आश्चर्य ही क्या है ? वहाँ तो रोज ही अँधेरे बादलों से बरसात उमड़ती रहेगी।

कैसी है यह दुनिया, मैंने सोचा। एक ओर 'बिस्मिल जिन्दाबाद' के नारे और चुनाव में वोट लेने के लिए बिस्मिल द्वार का निर्माण और दूसरी ओर उनके घरवालो की परछाई तक से भागना और उनकी निपूती बेवा माँ पर बदनामी की मार ! एक ओर शहीद परिवार सहायक फण्ड के नाम पर हजारो को चन्दा और दूसरी ओर पथ्य और दवादारू तक के लिए पैसो के अभाव में बिस्मिल के भाई का टी. बी. से घुटकर मरना ! क्या यही है शहीदों को आदर और उनकी पूजा ? '

फिर आऊँगा माँ, कहकर मैं चला आया, मन पर न जाने कितना बड़ा भार लिए।

शाहजहाँपुर
23, फरवरी 1946
शिव वर्मा
प्रस्तुति – अवत्सार

तपोवन आश्रम देहरादून में वैदिक पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर

तपोवन आश्रम, देहरादून में "सनातन वैदिक पुरोहित एवं आर्योपदेशक निर्माण शिविर" का आयोजन किया गया। देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 100 प्रशिक्षुओं को एकत्रित कर दस दिवसीय गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस शिविर का उद्देश्य ऐसे पुरोहितों और उपदेशकों का निर्माण करना था जो समाज को नई दिशा दे सकें।

संस्था प्रमुख आचार्य अनुज शास्त्री जी ने कहा कि आज अनेक स्थानों पर धार्मिक अनुष्ठान तो हो रहे हैं, परंतु समाज निर्माण का पक्ष कमजोर होता जा रहा है। युवा नशे की गिरफ्त में हैं, परिवार विघटन की ओर बढ़ रहे हैं, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियाँ पुनः सिर उठा रही हैं तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसे समय में आवश्यकता केवल कर्मकांड कराने वाले पुरोहितों की नहीं, बल्कि ऐसे वैदिक मार्गदर्शकों की है जो समाज को जागृत कर सकें।

शिविर का प्रत्येक दिन व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण को केंद्र में रखकर तैयार किया गया था।

प्रातःकाल योग, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से शारीरिक एवं मानसिक विकास का प्रशिक्षण दिया गया। आचार्य अनुज शास्त्री जी ने प्रशिक्षुओं को बताया कि स्वस्थ शरीर, संयमित मन और उच्च चरित्र ही सफल जीवन की आधारशिला हैं।

वरिष्ठ वैदिक विद्वान् आचार्य अनुज शास्त्री व आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी ने वेद मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, व्याकरण, स्वर–विन्यास तथा वैदिक कर्मकांड का गहन प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षुओं ने यज्ञ, संस्कार, संध्या, स्वाध्याय और वैदिक उपासना की वैज्ञानिकता एवं सामाजिक उपयोगिता को समझा।

शिविर में केवल धार्मिक विषयों तक सीमित न रहकर राष्ट्र और समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर भी व्यापक चर्चा की गई।

डी.ए.वी. भरमौर (हि.प्र.) में अम्बेडकर तथा महात्मा हंसराज जयन्ती

हिमाचल प्रदेश के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्र में स्थित डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भरमौर (चम्बा) में डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा महात्मा हंसराज जी की जयन्ती संयुक्त रूप से मनाई गई।

इस अवसर पर एक वैदिक यज्ञ किया गया। प्राचार्य महोदय ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। छात्रों और अध्यापकों ने मिलकर वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान कीं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता की गई। अध्यापकों द्वारा उनके द्वारा भारत का संविधान बनाने के विषय में चर्चा की गई।

महात्मा हंसराज द्वारा आर्य समाज के उत्थान और दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों के उत्थान में दिए योगदान के विषय में बच्चों को अवगत कराया गया।

इस अवसर पर उपस्थित अभिभावकों ने विद्यालय में मानव निर्माण को लेकर किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

शान्ति पाठ तथा प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. चम्बा में डी.ए.वी. स्थापना दिवस

डी.ए.वी. स्थापना दिवस के पावन अवसर पर 01 जून 2026 को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, चम्बा (हरदासपुरा) में वैदिक यज्ञ, भजन, भाषण एवं विभिन्न सांस्कृ

तिक गतिविधियों का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शों एवं उनके महान योगदान का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया। कार्यक्रम ने सभी को सत्य, ज्ञान, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रसेवा के उन उच्च आदर्शों की याद दिलाई, जिन पर डी.ए.वी. संस्था की सुदृढ़ नींव रखी गई थी।

इस कार्यक्रम के दौरान वैदिक संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया गया। साथ ही यह संदेश दिया गया कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के उत्थान का एक सशक्त माध्यम भी है।

प्रधानाचार्य श्री अशोक कुमार गुलेरिया ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शों का अनुसरण करते हुए सत्यनिष्ठा, अनुशासन तथा राष्ट्रसेवा की भावना को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। उपस्थित सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इन आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा : ग्रीष्मकालीन शिविर

श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा जिला अमरोहा (उ.प्र.) में 24 मई से 31 मई तक महाविद्यालय स्तर की छात्राओं हेतु एक विशिष्ट अध्ययन सत्र का आयोजन किया गया। इस ग्रीष्मकालीन विशिष्ट सत्र में डॉ ज्वलंतकुमार शास्त्री जी एवं पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी ने विभिन्न वैदिक सिद्धांतों की चर्चा की। आचार्या डॉ सुमेधा जी ने छात्राओं को निरंतर उद्‌बोधित एवं प्रेरित किया। डॉ श्री हरि सिंह आर्य जी ने व्यायाम व शस्त्र आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया।

सात दिन तक चले इस शिविर में स्वामी सच्चिदानन्द जी ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विषयों पर चर्चा की। डॉ ज्वलंत कुमार शास्त्री जी ने महर्षि दयानन्द, वेद–वेदांग, यज्ञ, संस्कार, ईश्वरोपासना, वर्ण व्यवस्था आदि विषयों पर अपना उपयोगी व शोधपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने उपनिषदों, स्मृति ग्रंथों और वैदिक आख्यानों आदि के माध्यम से छात्राओं की सैद्धांतिक तथा नैतिक समझ को परिपुष्ट किया।

आचार्या सुमेधा जी ने बताया कि इस समय गुरुकुल में देश के 22 राज्यों से आई 1300 छात्रायें आवासीय व्यवस्था में रहकर शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। उन्होंने स्वामी सच्चिदानन्द जी तथा डॉ. ज्वलन्त कुमार जी का आभार व्यक्त किया।

डी.ए.वी. दत्तनगर ने की जीव-सेवा

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल दत्तनगर (हिमाचल प्रदेश) के छात्रों ने जीव–दया की एक अनूठी मिसाल पेश की है। छात्रों

ने न केवल अन्न की बर्बादी को रोकने का संदेश दिया, बल्कि मूक पशुओं के प्रति अपनी संवेदनशीलता भी दिखाई। बच्चों द्वारा बचे हुए भोजन, चपाती, हरी घास, फीड और चोकर का प्रबंध किया। इसके बाद सभी छात्र स्थानीय गौशाला पहुँचे जहाँ उन्होंने अपने हाथों से गायों को चारा खिलाया और उनकी सेवा की।

'ओ३म्' की महिमा पर एक रैली निकाली गई जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों और आम लोगों को 'ओ३म्' के महत्व और आध्यात्मिक मूल्य के बारे में जानकारी देना था।

विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉक्टर मुक्ता चौहान ने छात्रों की इस निःस्वार्थ सेवा की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैदिक हवन, गौ सेवा और 'ओ३म्' जागरूकता रैली जैसी आध्यात्मिक गतिविधियाँ यह दर्शाती है कि विद्यालय के बच्चे संस्कारों को व्यावहारिक जीवन में भी उतार रहे हैं। इस छोटी सी पहल ने पूरे क्षेत्र में युवाओं के लिए प्रेरणा का संदेश दिया है।

प्राचार्या ने बताया कि उनका विद्यालय छात्रों में भारतीय संस्कृति, वैदिक मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में प्रयासरत है। विद्यालय में 'आर्य युवा समाज' का गठन भी किया गया है जिसके अंतर्गत गौ सेवा, ओ३म् जागरूकता रैली जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया।

डी.ए.वी. वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला घुमारवीं में महात्मा हंसराज जयन्ती

डी.ए.वी वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला घुमारवीं में महात्मा हंसराज जयन्ती बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस जयन्ती के उपलक्ष्य पर विद्यार्थियों द्वारा अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा वैदिक हवन का भी आयोजन

किया गया। प्रधानाचार्य महोदय जी ने बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि महात्मा हंसराज का जीवन वैदिक आदर्शों, निःस्वार्थ कर्म, त्याग, शिक्षा और लोकहित की प्रेरणादायी अभिव्यक्ति के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। उनके आचरण से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि यदि व्यक्ति दृढ़ संकल्प और निष्काम भावना के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन करे, तो वह समाज में स्थायी और व्यापक परिवर्तन ला सकता है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा महात्मा हंसराज के प्रति अपनी भावनाओं को श्रद्धापूर्वक प्रस्तुत किया गया। वास्तव में महात्मा हंसराज जी का जीवन, त्याग, तपस्या धर्म के प्रति दृढ़ता, परोपकार, न्याय प्रियता, देश भक्ति आदि भावनाओं से ओत–प्रोत रहा। उनका जीवन संसार के लिए आदर्श दिशा निर्देश दे गया। 'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श का आचरण कर विश्व में एक उत्कृष्ट मिशाल कायम करने में वे सफल रहे। इन्हीं भावनाओं को विद्यालय के छात्रों ने प्रस्तुत किया।

शान्ति पाठ व धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**